

विचार बिन्दु

अगर इंसान सुख-दुःख की चिंताओं से उपर उठ जाये तो आसमान की ऊँचाई भी उसके पैरों तले आ जाये। –शेख सादी

इंसान क्यों बना हैवान?

‘एक तरफा प्यार में छात्र द्वारा शिक्षिका की तलवार से हत्या’– बांसवाड़ा
“लाल बना काल, बेटे ने मां की चाकू से हत्या की, फिर ट्रेन से कटकर जान दी”– जयपुर
“पति-पत्नी अपने दो बच्चों के साथ टैंक में कूदे, चारों की मौत”– बाड़मेर
“शादी नहीं करने से नाराज युवती ने खुदकुशी की”– जयपुर
“सूदखोरी की आग में व्यापारी की मौत” बयान के आधार पर मामला दर्ज, जांच शुरू
“खुद को आग लगाकर ट्रांसपोर्ट नगर थाने में घुसा प्रॉपर्टी डीलर, मोटा ब्याज वसूलने और प्रताड़ना का मामला साझेदार के खिलाफ दर्ज”
“यूपी में मुस्लिम युवती ने हिंदू बनकर शिक्षक से शादी की, सुहागरात पर मौत के घाट उतारा”–कुशीनगर
“ढाबा संचालक पर डंडे व सरियों से हमला, मोबाइल और 8000 रुपए लूटे, बेहोश होने तक पीटते रहे–जयपुर
“स्कॉर्पियो से बदमाशों ने बाइक सवार ज्वेलर को टक्कर मारी – 10 किलो चांदी 1 तोला सोना और नकदी लूटी”– जयपुर
“लखनऊ में दामाद ने सास-ससुर को उतारा मौत के घाट”
“दिल्ली में घरेलू नौकर ने मालिकन की डांट के बाद मालकिन और उसके बेटे की हत्या की”
“साठ वर्षीय फूफा के प्यार में शादी के बाद पति की हत्या करवाई”
उपरोक्त समाचार पत्रों की हेडलाइंस केवल एक या दो दिन की ही है। ऐसे ही समाचार हमें प्रतिदिन नियमित रूप से पढ़ने को मिलते रहते हैं और यह हाल केवल जयपुर या राजस्थान का ही नहीं है अपितु पूरे देश का है। क्या यही वह संस्कृति है जिसका गुणगान करते हम नहीं थकते? क्या यही वह सभ्यता और समाज है जिस पर हम गर्व कर सकते हैं और जिसके आधार पर विश्वगुरु कहलाना चाहते हैं?

भारत सदैव सामाजिक सौहार्द, पारिवारिक संबंधों की मधुरता, मालिक – नौकर के बीच घरेलू संबंधों के लिए जाना जाता रहा है। सहिष्णुता, सहयोग, समन्वय, सदमयता एवं संवेदनशीलता हमारी संस्कृति के विशिष्ट गुण रहे हैं।

अब ऐसा क्या हो गया कि प्रत्येक मानवीय संबंध चाहे वह पति-पत्नी का हो, पिता-पुत्र का हो, मां-बेटे का हो, मालिक-नौकर का हो ग्राहक-दुकानदार का हो, दोस्तों का हो, केवल और केवल हवस का शिकार हो गया है। यह हवस पैसे की हो सकती है, शारीरिक हो सकती है या फिर अहम की तुष्टि की भी हो सकती है। हम उपरोक्त लिखित घटनाओं का अकलन करेंगे तो पाएंगे कि इन सब के मूल में मनुष्य की बढती घृणा, यौन हिंसा, ईर्ष्या और अति भौतिकतावादी प्रवृत्ति है। हमारे समाज में इस प्रकार का पतन किस प्रकार हुआ और क्यों हम इस स्थिति में पहुँच गए कि प्रतिदिन हमें रिश्ते को तार-तार होते देkhना पड़े या थोड़ी सी भौतिक सुख सुविधाओं के लिए किसी मासूम की हत्या करने के समाचार पढ़ने को मिलें?

एक मालकिन ने अपने घरेलू नौकर को थोड़ा सा डांट दिया तो उसने गुस्से में उतेजित होकर अपनी मालकिन और उसके 14 साल के मासूम बेटे की हत्या कर दी। उसके मन में एक क्षण के लिए भी यह विचार नहीं आया कि इन्हीं लोगों ने उसे काम दिया है। यह अविश्वसनीय लगता है किंतु हमारे देश में यह वास्तविकता बन चुका है।

कोई दामाद अपने सास-ससुर की हत्या कर दे तो इसे क्या कहा जाएगा? जिस व्यक्ति के साथ सात फेरे लेकर जनम-जनम का साथ निभाने का वादा किया हो, उसी की हत्या जब कोई अपने प्रेमी के साथ मिलकर करवा दे तो इसे नैतिक पतन की पराकाष्ठा ही कहा जाएगा।

रिश्ते-नाते तो जैसे पतुकाल की बातें हो गई हैं। आजकल की घटनाएं देखकर ‘उपकार’ फिल्म के प्रसिद्ध गाने की ये पंक्तियां बरबस याद आ जाती हैं –
“कसमें-वादे प्यार क्या, सब बातें हैं नातों का क्या,
कोई किसी का नहीं, झूठे नाते हैं, नातों का क्या?”

आइए, हम इस प्रकार की स्थिति के लिए जिम्मेदार कारणों का विश्लेषण करने का प्रयास करें। सबसे प्रथम कारण तो यह है कि संस्कृत परिवार की प्रथा लगभग समाप्त हो गई है। पहले दो-तीन पीढ़ियां एक साथ रहती थीं जिससे परिवार में ही साथ में रहने के लिए अत्यावश्यक गुण बचपन से ही विकसित हो जाते थे। जब सब मिल-बैठ कर भोजन करते थे तो सबके साथ बात करने का बहुत अवसर मिला करता था। बच्चों को सोने से पहले दादा-दादी या माता-पिता उनको पुरानी अच्छी कहानियां सुनाकर सुलाते थे। एक पर कोई कष्ट आता तो दूसरे सहायता करने को तत्पर रहते थे। बीमार होने पर पड़ोस के लोग भी परिवजनों की ही तरह सेवा में लग जाते थे।

व्यवसाय या नौकरी के लिए बाहर जाने के कारण अधिकांश परिवार, एकल परिवार हो गए हैं। परिवार में केवल पति-पत्नी और उनके एक या दो बच्चे होते हैं। चाचा-चाची, मामा-मामी, मौसा-मौसी, बुआ-फूफा जैसे रिश्ते आजकल केवल नाम मात्र के रह गए हैं। लड़कियों की बहुत पढ़ाई होने लगी है। इस कारण आर्थिक रूप से वे आत्मनिर्भर हो गई हैं और वे भी पति के जितना ही कमाने लगी हैं। आर्थिक रूप से उनका आत्मनिर्भर होना अनुचित नहीं है, किंतु इसके कारण छोटा-मोटा विवाद भी तलाक तक पहुँच जाता है। किसी भी प्रकार को उत्तेजनात्मक

क्या यही वह संस्कृति है जिसका गुणगान करते हम नहीं थकते? क्या यही वह सभ्यता और समाज है जिस पर हम गर्व कर सकते हैं और जिसके आधार पर विश्वगुरु कहलाना चाहते हैं?
भारत सदैव सामाजिक सौहार्द, पारिवारिक संबंधों की मधुरता, मालिक - नौकर के बीच घरेलू संबंधों के लिए जाना जाता रहा है। सहिष्णुता, सहयोग, समन्वय, सदाशयता एवं संवेदनशीलता हमारी संस्कृति के विशिष्ट गुण रहे हैं।

उसे लगता है कि उसे किसी से कोई लेना-देना ही नहीं है तो फिर दूसरे भी उसकी परवाह करना छोड़ देते हैं। शायद यही कारण है की विदेशों की तरह यहां भी संतानें, माता-पिता को वृद्धाश्रम में भेजने लगी हैं। जिन मां-बाप ने अनेक कष्ट उठाकर अपने बच्चों को बड़ा किया और अपनी रातें उनकी सुख-सुविधाओं का ध्यान रखने में बिता दीं, आज वही बच्चे थोड़े से भौतिक स्वार्थ और सुविधा के लिए उन्हें ओल्ड एज होम में भेजने से भी नहीं हिचकते।

आज किसी व्यक्ति के लिए पूरी दुनिया ‘मैं’ में सिमट कर रह गई है। इसमें दूसरे किसी का प्रवेश होना ही संभव नहीं है। यहां तक कि पति-पत्नी में भी यही भाव लागू होती है। हाल ही में सोनम नाम की एक लड़की ने मध्य प्रदेश में राजा से शादी की और शादी के साथ ही उसने अपने पति की हत्या करने की साजिश रचना प्रारंभ कर दिया था। एक युवती ने अपने फूफा से सम्न्ध के कारण शादी होते ही अपने पति को मरवा दिया।

पहले जहां बच्चे अच्छी नैतिक मूल्यों वाली कहानियां सुनकर बड़े होते थे, आजकल बचपन से ही हिंसा, अश्लीलता, घृणा और नफरत के वीडियो, फिल्मों मोबाइल पर देखकर बड़े हो रहे हैं। आजकल तो बच्चा पैदा होते ही जब रोने लगता है तो मां-बाप उसे मोबाइल के माध्यम से चुप कराना ज्यादा सही समझने लगे हैं। मोबाइल की तल धीरे-धीरे उनके लिए कई प्रकार की मानसिक और शारीरिक बीमारियों का कारण बन जाती है। अधिकांश शारीरिक रोग जैसे स्पॉन्डिलाइटिस हो, कहर में दर्द हो, आंखों का खराब होना होना हो या मानसिक प्रत्युण की बात हो, सभी की जड़ में मोबाइल का दुष्प्रभाव ही है। मोबाइल के हानिकारक प्रभाव को देखते हुए ही जापान में 10 वर्ष की आयु तक बच्चों को मोबाइल से दूर रखा जाता है। ऑस्ट्रेलिया में भी 16 साल से कम आयु के बच्चे सोशल मीडिया अकाउंट नहीं खोल सकते हैं।

भारत में स्थिति इस के ठीक विपरीत है। जब कभी किसी जगह इंटरनेट बंद हो जाए या मोबाइल खो जाए तो जिस प्रकार की व्यथता मोबाइल धारकों में देखी जाती है उसको देखकर ऐसे लगता है कि शायद मोबाइल सदैव से, जीवन का अनिवार्य भाग रहा है। वास्तविकता यह है कि आज से 25-30 वर्ष पूर्व मोबाइल नहीं था, तो शायद जीवन कहीं अधिक सुविधाजनक और आनंददायक था।

मोबाइल के कारण जिस प्रकार की हिंसा और यौन हिंसा वाली फिल्में कच्ची उम्र में बच्चों को देखने को मिल रही है उसी के कारण उन घटनाओं को हम देखते हैं जिनका उल्लेख इस आलेख के प्रारंभ में किया गया है।

आज एक-दूसरे की लाश पर पांव रखकर आगे बढ़ने की जो गला काट प्रतिस्पर्धा होती जा रही है वह भी इस प्रकार की हिंसक घटनाओं को बढावा दे रही है।

पति-पत्नी में आ रही रिश्ते में बढती कड़वाहट और बिखरते रिश्तों को देखते हुए ही, आजकल अनेक युवा विवाह के बंधन में बंधने तक से बचने लगे हैं। कई लोग विवाह करने के बाद भी बच्चे पैदा करना एक मुसीबत का कारण मानते हैं। इस प्रकार की मनोवृति यदि थोड़े समय और चलती रही तो किस प्रकार यह सुष्टि बचेगी और किस प्रकार पारिवारिक संबंध बचेंगे, इस पर भी प्रश्न चिन्ह लगता है। तब, मनुष्य और जानवर में जो अंतर है वह भी समाप्त हो जाएगा।

इंसान है तो इंसानियत उसमें होनी चाहिए। जब कोई छात्र अपनी शिक्षिका का तलवार से गला काट ले या कोई कोई चनिष्ठ मित्र थोड़े से पैसे के हलालच में अपने निकट दोस्त की हत्या कर दे, तो इसे हैवानियत ही कहा जाएगा। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि मनुष्य इंसान तो नहीं बन पाया, शैतान और हैवान अवश्य बन गया।

यहां यह नहीं कहा जा रहा है कि मोबाइल की कोई उपयोगिता नहीं है, किंतु इस इसे काम में लेने के लिए जिस प्रकार के विवेक, समझ और बुद्धिमानी की आवश्यकता है वह विवेकित करने की जिम्मेदारी माता-पिता के साथ ही समाज के प्रबुद्ध लोगों और शिक्षकों की भी है। यह तब ही संभव है जब वे स्वयं भी इन पर अत्यधिक निर्भरता को कम करें और इसके उपयोगी पक्ष को ही सामने रखते हुए विवेकपूर्ण कार्य करें।

मोबाइल के माध्यम से आज कच्ची बस्ती में रहने वाला व्यक्ति भी यह जानता है कि लंदन, वाशिंगटन या मुंबई में किस प्रकार का जीवन धनी लोग व्यतीत कर रहे हैं और फिर वह भी उसी प्रकार का जीवन जीने की लात्सला लग लेता है। अपनी क्षमता के आधार पर उतना पैसा नहीं कमा पाने की स्थिति में वह किसी भी असाभाविक या आपराधिक कार्य में लिप्त होने से नहीं हिचकता।

हम मनुष्य को इंसान बनाने की बात करते हैं और इसके लिए विभिन्न प्रकार के प्रयास भी करते हैं, किंतु मनुष्य इंसान बनना तो दूर, वह तो समय के साथ-साथ हैवान बनता जा रहा है।

देश के कर्णधारों, शिक्षाविदों, चिंतकों और जनप्रतिनिधियों को गंभीरतापूर्वक समाज में तेजी से बढ रही हिंसक मनोवृति पर लगाम लगाने के उपाय करने होंगे। क्या इसके लिए कुछ पुराने समय की अच्छी बातों को पुनर्स्थापित नहीं किया जा सकता? आशा करनी चाहिए कि समय रहते किए गए प्रयासों से नई पीढ़ी एक-दूसरे के प्रति आदर, सद्भाव, प्रेम, स्नेह और निंटास के आधार पर रिश्ते बनाएगी ताकि हम अपनी विरासत पर गर्व कर सकें। यदि हमने समय रहते इस पर कोई कार्य नहीं किया तो फिर आने वाली पीढ़ी हमें काटफा माफ नहीं करेगी। समाज एक बार पतन के गर्त में चला जाएगा तो फिर वहां से ऊबर पाना ही असंभव हो जाएगा।

–अतिथि सम्पादक, राजेन्द्र भागावत (पूर्व आई.ई.एस. अधिकारी)

इतिहास के झरोखे से मध्य पूर्व एशियाई देशों की राजनीति और इजरायल



महावीर सिंह

29 जून को प्रकाशित लेख से अंगू--

राष्ट्रदूत के 29 जून 2025 के अंक में हमने जाना कि वर्तमान इजरायली राज्य का गठन, 1916-17 से कैसे कैसे विभिन्न समझौतों, घोषणाओं, प्रस्तावों के जरिए हुआ।

इस अंक में हम वर्तमान इजरायल– फिलिस्तीनी भूभाग की भौगोलिक स्थिति और इतिहास में इस भूभाग में घटी प्रमुख घटनाओं की जानकारी के साथ साथ यहूदी, ईसाई, इस्लाम धर्मों के माईथोलजी और ऐतिहासिक दृष्टि से आपसी संबंधों और संघर्षों को समझने का प्रयास करेंगे।

भौगोलिक स्थिति :- इजरायल का भू भाग जिसे इतिहासकार विभिन्न नामों यथा फिलिस्तीन, यहूदा राज्य, कनान, लेवांट आदि लिखते आए हैं, वह भूमध्य सागर से लगता है जिसके दक्षिण पश्चिम में मिश्र की सीमा लगती है। लेबानन और जॉर्डन की सीमा भी इजरायल से लगती है। इसके आस पास के दूसरे देश पूर्व में जॉर्डन, उत्तर में सीरिया व फिलिस्तीन, तुर्क स्थित है। जॉर्डन नदी इजरायल जॉर्डन की सीमा तय करती है और इसके पश्चिम का भाग, वर्तमान में विवादित वेस्टबैंक व गाजा पट्टी का है।

तेल अवीव, बेरुत, रामल्ला, जूडिया, बेथलेहेम, गैलीली, जाफ़ा, हाइफा, हिब्रोन, एलाट, अकाबा आदि इस क्षेत्र के प्रमुख शहर हैं। अकाबा की खड़ी से लालसागर, अरब सागर का समुद्री मार्ग खुलता है। इनमें से अधिकांश शहर भूमध्य सागर के तट पर हैं। व्यापार-वाणिज्य-नोपरिवहन– कृषि की दृष्टि से यह क्षेत्र

सदैव से महत्वपूर्ण रहा है

तुर्क के क्षेत्र से बहकर आने वाली तथा कई ऐतिहासिक सभ्यताओं की जननी नदिया दजला (टिगरिस) व फरात (युफ्रेटिस) आदि इस क्षेत्र में तुर्क, सीरिया, इराक आदि देशों से बहकर अरब सागर में मिलती है। इन नदियों के बीच का भूभाग मेसोपोटामिया के नाम से जाना जाता था। इसी क्षेत्र में सुमेरीयन, अक्काडियन, बेबिलोनियन, असीरियाई सभ्यताएं पनपी जो विश्व की ज्ञात सर्वाधिक पुरानी सभ्यताओं में से हैं।

इतिहास के झरोखे से फिलिस्तीन क्षेत्र की राज व्यवस्था :-फिलिस्तीन लेवेंट के नाम से जाने जाने वाले बड़े क्षेत्र का हिस्सा है जो इतिहास में विभिन्न सभ्यताओं का चौराहा रहा है। 1948 से पहले, फिलिस्तीन अरबों, यहूदियों और ईसाइयों की एक विविध आबादी का घर था, क्योंकि सभी समूहों का इस क्षेत्र, विशेष रूप से यरुशलम शहर से धार्मिक संबंध था। फिलिस्तीन क्षेत्र पर समय समय पर अक्कादियन, बेबिलोनिया, असीरियन, रोमन-बाईजेंटीन, यूनानी, फारसी (पर्सियन– ईरानी), मिश्र, सेलजुक तुर्क, अरब शासकों ने राज किया या प्रभावित किया। यूनानी लेखकों के लेखन को सही मानते हुए कुछ इतिहासकारों के अनुसार 12 सदी ईशा पूर्व से सातवीं ईसापूर्व सदी तक यहां एक फलती-फूलती सभ्यता थी। कुछ का मानना ​​है कि 5 वीं (बीसी) से पहले के विश्वसनीय प्रमाण नहीं हैं किंतु इसके बाद इस क्षेत्र के बारे में ठीक लेखकों का लिखा काफी कुछ मिलता है।

सुमेरियन सभ्यता, मानव इतिहास की कृषि आधारित, बहुदेव वादी, शुरुआती शहरी सभ्यताओं में से एक थी, जो 4500 ईसा पूर्व के आसपास दक्षिणी मेसोपोटामिया में उभरी थी। इसने इस क्षेत्र को बड़े पैमाने पर प्रभावित किया। बहुदेव वादी अक्काडियन सभ्यता, प्राचीन मेसोपोटामिया की एक दूसरी सभ्यता थी जो लगभग 2334 की ईसा पूर्व से 2154 ईसा पूर्व तक अस्तित्व में थी। यह अक्कड़ शहर और उसके आसपास के क्षेत्र में केंद्रित थी, और इसमें अक्काडियन और सुमेरियन भाषी लोग शामिल थे। अक्काडियन

63 बीसी में, जब इजरायल में यहूदी सभ्यता 1,000 साल से ज्यदा पुरानी हो चुकी थी, रोम ने,जनरल पोम्पी के नेतृत्व में यहूदी राष्ट्र पर कब्जा कर लिया। इस समय, रोमनस ने इस क्षेत्र की आबादी के एक हिस्से को निर्वासित कर दिया।रोमन शासन 636 ईस्वी तक रहा। यहूदियों के प्रति रोमनस का शुरुआती व्यवहार कठोर था। इसके कारण क्षेत्र में रोम के गवर्नरों के विरुद्ध विद्रोह भी हुए। कोखबा विद्रोह के बाद, इजरायल से, यहूदियों का निष्कासन भी हुआ। रोम में अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए 63 बीसी के आसपास ही येरुशलम के पवित्र मंदिर को जलाया।यह दूसरी बार हुआ। रोमन लोग इस क्षेत्र को जूडिया या सीरिया या

साम्राज्य को इतिहास का पहला साम्राज्य माना जाता है, जिसने मेसोपोटामिया, लेवांट क्षेत्रों और अनातोलिया में महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। इस सभ्यता का प्रसिद्ध राजा सारागौन दी ग्रेट था जिसने 24वीं से 22वीं शताब्दी ईसापूर्व में कई विजय प्राप्त की।गुटियन लोगों के आक्रमणों से यह सभ्यता 2154 ईशा पूर्व में समाप्त हो गई।

असीरियन सभ्यता भी इसी क्षेत्र में पनपी। यह तीन काल खंडों :- 2000 से 1600 बीसी, 1365 से 1056 बीसी, 911 से 612 ईसापूर्व में बनती विगड़ती रही। यह सभ्यता भी बहुदेव वादी थी। राजनीति व धर्म का गठजोड़ था। इस सभ्यता बड़े टावर गुमा जिगुराट मंदिर के लिए भी जानी जाती है।इस सभ्यता का विस्तार मिश्र तक था। निन्वेह इसकी राजधानी थी जिसे 612 बीसी में बेबीलोन और मीडियनों ने नष्ट कर दिया। इस प्रकार इस सभ्यता का अंत हो गया। वर्तमान इराक व पुराना अशुर शहर इसका प्रमुख क्षेत्र था।

लगभग 720 ईसा पूर्व में, असीरियाई राजा तिलथय-पाइलसर ने उत्तरी इजराइल के राज्य पर विजय प्राप्त की। दस इजरायली/यहूदी जनजातियों को असीरिया में निर्वासित कर दिया, जिन्हें यहूदी धर्म में ‘खोई हुई जनजातियां’ माना जाता है। इसके पश्चात नव बेबिलोनिया साम्राज्य के राजा नबुकदनेसर द्वितीय द्वारा 586 बीसी में इजरायल क्षेत्र में हमला कर,प्रथम बार यहूदियों के पवित्र पर्वत मंदिर को नष्ट किया।

इसके कारण क्षेत्र में रोम के गवर्नरों के विरुद्ध विद्रोह भी हुए। कोखबा विद्रोह के बाद, इजरायल से, यहूदियों का निष्कासन भी हुआ। रोम में अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए 63 बीसी के आसपास ही येरुशलम के पवित्र मंदिर को जलाया।यह दूसरी बार हुआ। रोमन लोग इस क्षेत्र को जूडिया या सीरिया या

प्लास्टिन के नाम से जानते थे।

636 ईस्वी तक रोमन साम्राज्य का हिस्सा रहने के बाद अरबों, तर्कों ने इस पर अधिकार किया। ईरानी साम्राज्य (पार्थियन और सासानी) ने 2 शताब्दी ईसा पूर्व से 7 वीं शताब्दी ईस्वी (614– 628)तक फिलिस्तीन के कुछ भागों पर शासन किया।वर्ष 614 में ईरानी पार्थियन शासकों में पूर्वी रोमन साम्राज्य (बाईजेंटीन) ने येरुशलम छीन लिया।1099 में प्रथम धर्म युद्ध के समय यरुशलम पर ईसाईयों में कब्जा कर लिया।

यहूदी धार्मिक पुस्तक तनख़/तोरा व ओल्ड टेस्टामेंट में यहूदियों के मिश्र में बसने या जबरन ले जाए जाने और वहां से भागने का उल्लेख आता है। इस घटना के समय, कुछ इतिहासकार इजरायल को मिश्र का उपराज्य मानते हैं। इसका एक उल्लेख मैग्नेटा स्टेल में लगभग 1207 ईशा पूर्व का मिलता है। यहूदी धार्मिक पुस्तकों में भी 13वीं बीसी के आसपास की घटना में मूसा के नेतृत्व में यहूदियों का मिश्र की कैद अर्थात जबरिया दासत्व से भागने का उल्लेख है। इतिहासकारों में मतभेद है कि यह जबरन दासत्व/कैद थी या कनान क्षेत्र के यहूदियों का मिश्र में रोजगार के लिए स्वेच्छा से जाना था। मूसा की नेतृत्व में मिश्र से पलायन की घटना को यहूदी लोग हर साल फराह के त्यौहार के रूप में मनाते हैं।

तुर्कों ओटोमन साम्राज्य ने 1517 से 1917 तक इस क्षेत्र के अधिकांश भाग पर शासन किया, लेकिन प्रथम विश्व युद्ध के बाद ब्रिटेन ने फिलिस्तीन और पूर्व साम्राज्य के अन्य क्षेत्रों पर नियंत्रण कर लिया। इस समय, लीग ऑफ नेशंस ने फिलिस्तीन के लिए एक ब्रिटिश शासनादेश जारी किया, जिसने ब्रिटेन को इस क्षेत्र पर प्रशासनिक नियंत्रण (मैंडेट) दिया।

लीग आफ नेशंस के द्वारा ब्रिटेन को कब्जा देने के बाद से ही दूसरे देशों में बसे लोग प्रताड़नाओं के कारण इस क्षेत्र में आकर बसने लगे।यहां जमीन की करली।घर बनाकर खेती करने लगे। जगह-जगह छोटी-छोटी यहूदी बस्तियां, शहर बसने लगे और अंततः फिलिस्तीन पर यहूदियों का कब्जा स्थायी कब्जे में बदल गया है।

अंत्योदय शिविर : श्रीगंगानगर के चरणजीत को 48 वर्ष बाद आवासीय पट्टा मिला

अपने ही घर का पट्टा नहीं होने से चरणजीत सिंह दोहरी जिन्दगी जी रहा था। उसके पास अपना मकान तो था लेकिन पट्टा न होने के कारण उसका मालिकाना हक नहीं था, अतिक्रमण के नाम पर कभी भी उसे तोड़ा जा

■ 48 सालों में चरणजीत सिंह ने कई कार्यालयों के चक्कर लगाए, लेकिन कभी नियमों के कारण और कभी दस्तावेजों की कमी बताकर उसे पट्टा नहीं दिया गया

■ चरणजीत सिंह ने बताया कि पट्टा नहीं मिलने के कारण अनेक योजनाओं के लाभ से वंचित रहा

सकता था, उसे यह भी डर था कि कोई भूमिफिया इसे अपना ही आवास सिद्ध न कर दें या कोई अतिक्रमण हो जाये।

इस चिन्ता से मुक्त होने में उसे पूरे 48 साल लग गये। इन 48 सालों में उसने कई कार्यालयों के चक्कर लगाए लेकिन कभी नियमों के कारण



अंत्योदय शिविर में शिविर प्रभारी ने आवश्यक रिपोर्ट व अन्य कार्यवाही करते हुए चरणजीत सिंह को आवासीय पट्टा सौंपा।

और कभी दस्तावेजों की कमी बताकर उसे पट्टा नहीं दिया गया। श्रीगंगानगर जिले की रायसिंहनगर पंचायत समिति की ग्राम पंचायत 71 आरबी में पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा के शिविर में चरणजीत सिंह पुत्र भूपेंद्र सिंह निवासी 13 आरबी ने आवासीय पट्टे के लिये प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया। शिविर प्रभारी ने आवश्यक रिपोर्ट व अन्य कार्यवाही

करते हुए चरणजीत सिंह को आवासीय पट्टा सौंपा।

चरणजीत सिंह ने बताया कि गत 48 वर्षों से पट्टा नहीं मिलने के कारण अनेक योजनाओं के लाभ से वंचित रहा। अब उसे अपना मालिकाना हक मिला है, शांति के साथ जी सकता हूं कि बूढ़ापा चिन्तामुक्त निकलेगा, शांति के साथ मर सकता हूं कि मेरे बच्चे आशियाने के लिए भटकेंगे नहीं। आवासीय पट्टा मिलने से लोन

लेकर इसका विस्तार या मरम्मत भी करवा सकता हूं।

चरणजीत सिंह ने भजनलाल सरकार का आधार व्यक्त करते हुए कहा कि मेरे जैसे कई लोगों के बरसों से लंबित काम शिविर में हुए हैं। पूरे राजस्थान में पता नहीं कितने हजारों, लाखों लोगों के जरूरी काम हुए होंगे।

अनिल कुमार शाक्व, जनसम्पर्क अधिकारी, श्रीगंगानगर

अंत्योदय शिविर में लोगों की परिवेदनाओं का समाधान

रतनगढ़/राजल्लेसर, (निर्स)। रतनगढ़ तहसील के ग्राम पंचायत सिर्मसिया में सोमवार को पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़े के तहत शिविर का आयोजन किया गया। सरपंच परमेश्वर लाल मेघवाल की अध्यक्षता में लगे शिविर में तहसीलदार जितेंद्र सिंह, नायब तहसीलदार पूजा पारीक, एडीओ लक्ष्मीनारायण सैनी, ग्राम विकास अधिकारी हिम्मत सिंह, कनिष्ठ सहायक भगवानाराम, गिरदावर सुरेंद्र सिंह पटवारी गोपाल राहड़ सहित अधिकारी मौजूद रहे। इस दौरान नामांतरण, रास्ते के विवाद, आपसी बंटवारा, पट्टा वितरण आदि समस्याओं का मौके पर समाधान किया। ग्राम विकास अधिकारी हिम्मत सिंह ने बताया कि “हरियालो राजस्थान” के तहत वृक्षारोपण किया गया व गांववासियों को अधिकधिक पेड़-पौधे लगाने और उनकी निर्यात रूप से देखरख करने का आह्वान किया।शिविर में 84 राजस्व के मामले, 20 पेट्रे, 85 स्वामित्व पार्सल वितरित किए गए। तहसीलदार जितेंद्र सिंह ने कहा शिविर के दौरान आमजन से प्राप्त होने वाले प्रार्थना पत्र पर तत्काल कार्रवाई का प्रयास किया जाए और सरकार की योजनाओं से पात्र वंचित लोगों को लाभान्वित करे। इसके अलावा अधिक से अधिक पैधे पैधे लगाए ताकि पर्यावरण संरक्षण के लिए एक अनूठा उदाहरण पेश हो।

धनु	अनु
आज अत्यावश्यक धन खर्च हो सकता है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।	आज आवासयिक धन खर्च हो सकता है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।
अररज अर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन असंतोष बना रहेगा।	

मकर	कुंभ
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित खोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।	व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी।

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में समारोह्यक आवश्यकन प्राप्त होंगे। अटर्के हुए कार्य बनने लेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक कारणों से अटर्के हुए कार्य बनने लेंगे। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी।

मेघ
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आज पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

वृष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। धार्मिक-मार्गालिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज परिवजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
व्यवसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

कर्क
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज अतिथियों का आगमन रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में अतिथियों के आगमन दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

कन्या
आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। संभावित खोतों से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लेंगी। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा।

तुला
आर्थिक कारणों से अटर्क हुए व्यावसायिक कार्य बनने लेंगे। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लेंगे। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक योजना का क्रियान्वहन हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।